विरली माउ जुणे, का प्रेमी पुटु गरभ मों,
सामी सुपेरियुनि जी, जंहिंखे भगति वणे,
जाण विञाए पांहिंजी, सभ जो दासु बणे,
लिखिया कीन गणे, डिसी अलेखु अखिनि सां.

सामी साहब सच्चे प्रेमी भक्त का वर्णन करते हुए कहते हैं कि संसार में दुर्लभ कोई माता होगी, जिसने अपने गर्भ से प्रेमी पुत्र को जन्म दिया होगा। एक ऐसा सुपुत्र, जिसे प्रियतम परमेश्वर की भक्ति भाती है। जो अपनी संज्ञा भुला कर सब का सेवक बन जाता है। ऐसा ईश्वर भक्त अपनी आँखों से अलख (अलक्ष्य, ईश्वर) को देखकर/उसके दर्शन कर अपने प्रारब्ध का लेखा नहीं लगाता।

हर प्राणी जन्म लेता है। पशु हो या मनुष्य, माँ के गर्भ से ही जन्मता है। माता जननी है, जन्म देने वाली है। भिन्न रंग और रूप वाले, स्वभाव और वृत्ति वाले बच्चे माता की कोख से ही पैदा होते हैं। न सब माताएँ एक-से स्वभाव वाली होती हैं और न ही उनकी संतान एक जैसी होती है। गोरे और काले, लंबे और ठिगने, स्वस्थ और रोगी, सदाचारी और अनाचारी, अच्छे और बुरे, सुष्ठ और दुष्ट संतान माता ही जन्मती है। माता ही सुपुत्र या कुपुत्र को जन्म देती है। इस प्रकार संतान की दृष्टि से सारा संसार विचित्र प्रकार की विविधता से भरा पड़ा है । वेचित्र्य इस बात में है कि यह वैविध्य ही मनुष्य जीवन में सुख दु:ख का कारण भी बना हुआ है। मनुष्य अपना स्वभाव बदलने में सक्षम नहीं होता । और न ही वह अपने 'अहं' का त्याग कर सकता है।

इस दुखमय संसार में अपवाद स्वरूप में ऐसी भाग्यवान माताएँ भी जन्म लिये हुए होती हैं, जो सुपुत्रों को जन्म देती हैं। उन सुपुत्रों में से कुछ पुत्र-रत्न प्रभु के प्यारे भक्त बन जाते हैं और सारे संसार में एक आदर्श स्थापित करते हैं। भक्त के रूप में वे अमर हो जाते हैं। सामी साहब ने ऐसी पुण्यवान और भाग्यशाली माताओं को सन्मानित करते हुए कहा है कि ऐसी दुर्लभ माताएँ ही सच्चे प्रेमी भक्त बालकों को जन्म देती हैं। ऐसे बालकों ने परमेश्वर की भक्ति कर अमरता प्राप्त की है। इतिहास या पुराणों में ऐसे बालक भक्त उल्लेखनीय रहे हैं। भक्त प्रह्लाद और ध्रुव की माताएँ धन्य हैं, जिन्होंने ऐसे रत्नों को जन्म दिया, जिनके नाम आकाश में भी चमक रहे हैं।

■